ORIGINAL RESEARCH PAPER

History

KEY WORDS:

हर्षकालीन उत्तर भारत में बौद्ध धर्म की स्थिति का अध्ययन

सरोज शर्मा

इतिहास संकाय टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर (राज.)

हर्षकाल में अन्य धर्मों की तरह बौद्ध धर्म भी वैदिक धर्म के प्रतिपक्षी धर्म में रूप में प्रचलित हुआ। बौद्ध धर्म के आदि प्रवर्तक महात्मा बुद्ध थे जिन्होनें ईसा पूर्व छठी सदी में प्रवर्तन किया था। बुद्ध ने अपने धर्म द्वारा जिन आदर्शों व सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया वे वर्तमान समय में भी अपने अस्तित्व को बनाये हुए है। भारत ने बौद्ध धर्म के प्रतीक को अपने राजवृक्ष के रूप में स्वीकार किया है जो कि शान्ति तथा सह अस्तित्व के सिद्धान्तों का आधार है। भारत के प्रमुख सिद्धान्त पंचशील का सिद्धान्त भी इसी धर्म का अंश है। यदि बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों को अपनाते है तो शान्ति तथा सद्भाव स्थापित होने में कोई सन्देह नहीं है।

बौद्ध धर्म के द्वारा अंहिसा तथा सहिष्णुता का पाठ पठाया गया। इस धर्म नें लोगों के जीवन के नैतिक स्तर को ऊपर उठाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया तथा जनजीवन में सदाचार एवं सच्चरित्रता की भावनाओं का विकास हुआ। इस धर्म में नैतिकता को ज्ञान से ऊँचा स्थान दिया गया। बौद्ध धर्म ने न केवल भारत बल्कि विश्व के कोने–कोने में अपना नैतिक आधिपत्य स्थापित किया। यह धर्म मानव जाति के लिए समानता का आदर्श प्रस्तुत करता है। जीवों पर दया, अंहिसा, करूणा आदि का विकास बौद्ध धर्म की ही देन है।

बौद्ध धर्म की पृष्ठभूमि :–
बौद्ध धर्म का जन्म तात्कालिक धर्म हिन्दू धर्म अर्थात वैदिक धर्म में प्रचलित विभिन्न आडम्बरों के आगमन के कारण हुआ। इस समय वैदिक धर्म में अनेक कर्मकाण्ड तथा अन्धविश्वास प्रचलित हो गये थे जिसके फलस्वरूप महात्मा बुद्ध ने एक ऐसे धर्म का प्रसार किया जो पूरी तरह से आड़म्बर रहित था। गौतम बुद्ध बौद्ध धर्म के द्वारा अपने समय में समाज को धर्म तथा जाति व्यवस्था के अन्तर्गत आये हुए दोषों को दूर करना चाहते थे। इस धर्म के अन्तर्गत मनुष्य के नैतिक तथा सामाजिक गुणों का विकास किया जाता है। बुद्ध की धार्मिक दृष्टि बहुत ही उदार थी। उन्होंने समाज में प्रचलित अंधविश्वासों तथा रूढ़ियों को जैसे शकुन, अपशकुन, भविष्यवाणी नदियों के जल की पवित्रता, जादूगरी, स्वपन चमत्कार आदि का खण्डन करते हुए उन्हें ग्रहण नहीं करने योग्य बताया।

महात्मा बुद्ध अपने शरीर को कष्ट पहुँचाना, घोर तपस्या में लीन रहना तथा समस्त संसार को त्याग देना इन सभी बातों को अस्वीकार करते थे किन्तु अपने कुछ विशेष मतानुयायिओं को वे भिक्षा माँगकर जीवन व्यतीत करने के लिए प्रोत्साहित करते थे क्योंकि वे निर्वाण प्राप्त करने में सांसारिक सुखों को बाधक मानते थे।

सामान्य मनुष्य के लिए बुद्ध ने अलग धर्म का उल्लेख किया था जो कि भिक्षु धर्म से अलग था। इस धर्म को उपासक धर्म कहा जाता है। इस धर्म को गृहस्थ व्यक्तियों का धर्म कहा गया है। इस धर्म के अन्तर्गत गृहस्थों के लिए कुछ आचरणों का उल्लेख किया है – अंहिसा, प्राणियों पर दया, सत्य भाषण, माता–पिता की सेवा, गुरूजनों का सम्मान, ब्राह्मणों तथा श्रमणों को दान देना, तथा मित्रों व परिचितों आदि के साथ अच्छा बर्ताव करना।

महात्मा बुद्ध ने अपने धर्म के अन्तर्गत जो उपदेश दिये थे उन उपदेशों का प्रमुख उद्देश्य मनुष्यों को उनके दुःखों से छुटकारा दिलवाना था। महात्मा बुद्ध के उपदेशों में सरलता एवं व्यवहारिकता दिखाई देती है। बुद्ध का झुकाव ज्ञान तथा बुद्धि की ओर था न कि किसी कर्मकाण्ड की तरफ था। बुद्ध ने हिन्दू धर्म के अन्तर्गत आये हुये यज्ञों के कर्मकाण्ड तथा पशु बली का जमकर विरोध किया था साथ ही उन्होनें वैदिक धर्म के अन्तर्गत होने वाले अनुष्ठानों का भी विरोध किया था। बौद्ध धर्म के अन्तर्गत समानता को महत्वपूर्ण स्थान दिया था। क्योंकि उसका मानना था कि किसी भी मनुष्य के उसके भेदभाव उसके जन्म के आधार पर नहीं वरन् उसके गुणों तथा कर्मों के आधार पर होता है। छुआछूत तथा जांति–पांति का भेदभाव उनकी दृष्टि में नहीं था इसीलिए उनका धर्म सभी जाति के लिए समान था। महात्मा बुद्ध ने सभी प्रकार के ढोंग को हटाकर बुद्धि, विवेक, दया तथा प्रेम के आधार पर सरल–पवित्र जीवन जीने का उपदेश दिया था। बौद्ध धर्म का सर्वाधिक विकास इसकी कला तथा स्थापत्य में दिखाई देता है। इस धर्म से प्रेरणा लेकर शासकों तथा अनेक श्रद्धालुओं ने विभिन्न स्थानों पर स्तूप, विहार, चैत्यगृह, गुहाएँ, मूर्तियाँ आदि निर्मित की गई। सांची, सारनाथ, भरहुत आदि के स्तूप, अजन्ता की गुफाएँ एवं उनकी चित्रकारियाँ अनेक स्थानों से प्राप्त एवं संग्रहालयों में सुरक्षित बुद्ध तथा बौद्धिसत्वों की मूर्तियाँ आदि बौद्ध धर्म की भारतीय संस्कृति को अनुपम देन है। बौद्ध धर्म जिसे प्रथम विश्वधर्म की संज्ञा दी गई है जो मनुष्य मात्र के लिए था। भारत का सास्कृतिक सम्पर्क विश्व के अन्य देशों के साथ बौद्ध धर्म के कारण ही हुआ था। भारत के बौद्ध भिक्षुओं ने विश्व के विभिन्न भागों में जाकर अपने उपदेशों का प्रचार किया। इसकी शिक्षा से प्रभावित होकर कई विदेशी जातियों जैसे कि शक, कुषाण, पार्थियन आदि सम्मिलित थी, बौद्ध धर्म को ग्रहण किया था तथा अनेक विदेशी यात्री बौद्ध धर्म से प्रभावित होकर अध्ययन करने के लिए भारत आये थे। इनमें प्रमुख यात्री फाहियान, ह्वेनसाँग, तथा इत्सिंग भारत आये थे तथा कई वर्षों तक निवास कर बौद्ध धर्म का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त किया।

बुद्ध के पिता, उनकी मौसी महाप्रजापति गौतमी तथा उनकी पत्नी, पुत्र ने भी इस धर्म को ग्रहण किया था। शाक्य गणराज्य के राजा भद्रिक उसके सहयोगी आनन्द, अनुरूध, उपाली तथा देवदत्त ने भी बौद्ध धर्म को स्वीकार किया था। महान सम्राट अशोक के समय बौद्ध भिक्षुओं के जत्थे सीरिया, श्याम, मिश्र, मकदूनिया गये तथा वहाँ बौद्ध धर्म का प्रचार किया। उस समय इन देशों पर यूनान का अधिपत्य था परन्तु इन साधुओं का इतना अधिक प्रभाव था कि सभी बौद्ध धर्म को ग्रहण करने लगे। वैसे तो महात्मा बुद्ध ने अपने जीवनकाल में ही बौद्ध धर्म का विस्तार करना प्रारम्भ कर दिया था किन्तु वे बिहार और काशी के आसपास ही जीवन भर घूमते रहे और प्रचार करते रहे।

विदेशों में बौद्ध धर्म को प्रचार करने का श्रेय सम्राट अशोक को जाता है। उसने गांधार, कश्मीर, मिश्र, राजपूतानें, पश्चिमी पंजाब, यूनान, वेक्टेरिया, हिमालय के प्रान्तों में, वर्मा और लंका आदि देशों में बौद्ध धर्म के उपदेशकों को भेजा। अशोक की आज्ञाओं का पालन चोल, पांडय, केरल, लंका, सीरिया के यूनानी राज एन्टीओकस के राज्यों में भी किया जाता था। अशोक के धर्मलेखों से पता चलता है कि उसने ईजिप्ट, मेसेडेन, ऐपेरस तथा सीरिया में भी अपने दूत भेजे थे जिस समय अशोक मारत पर राज्य कर रहा था। उसी समय लंका पर तिष्य नामक राजा राज्य कर रहा था। उसने अशोक महान के धर्म से प्रभावित होकर मित्रता का प्रस्ताव भेजा और अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार के लिए अपने पुत्र महेन्द्र तथा पुत्री संघमित्रा को लंका भेजा जिन्होंने सम्पूर्ण लंका को बौद्ध धर्म में दीक्षित किया।

हर्ष द्वारा बौद्ध धर्म को राज्यश्रय देना :–
सम्राट हर्ष अपने शासन को प्रारम्भ करने से पहले शैव धर्म के अनुयायी थे। हर्ष ने परम महेश्वर की उपाधि ग्रहण की थी। हर्ष की मुद्रा पर शिव के वाहन नंदी का चिन्ह अंकित है। हर्ष ने रत्नावली नाटिका का प्रारम्भ भी शिव तथा पार्वती की पूजा से ही किया था। हर्ष एक धार्मिक सहिष्णुता का पालन करता था। ह्वेनसाँग के उल्लेखों से सम्राट हर्षवर्धन का बौद्ध धर्मानुयायी होने का प्रमाण मिलता है। नागानन्द तथा ह्वेनसाँग के उल्लेखों में हर्ष द्वारा बौद्ध धर्म को स्वीकार किये जाने का प्रमाण तो प्राप्त हो जाता है परन्तु हर्ष ने कब और क्यों धर्म परिवर्तन किया था इस बात के प्रमाण प्राप्त नहीं होते है।

बाण के अनुसार विध्यावटी में निवास करने वाला बौद्ध भिक्षु दिवाकर मित्र की ख्याति से प्रभावित होकर बौद्ध धर्म स्वीकार किया था तथा राज्यश्री की खोज में भी दिवाकर मित्र द्वारा सहयोग करने से प्रभावित होकर बौद्ध धर्म ग्रहण किया। बाण के विवरण से ज्ञात होता है कि हर्ष ने बौद्ध धर्म की दीक्षा दिवाकर मित्र से ग्रहण की थी लेकिन हर्ष इससे पहले भी बौद्ध धर्म के प्रति अनुराग रखता था जैसे दिवाकर मित्र से मिलने का विचार एवं राज्यवर्धन का बौद्ध धर्मानुयायी होना आदि। हर्ष के धर्म परिवर्तन का शिलान्यास करने का श्रेय राज्यवर्धन को ही जाता है। हर्ष ने अशोक की भांति युद्ध में घायलों की सिसकीयों से प्रभावित होकर बौद्ध धर्म को स्वीकार नहीं किया था बल्कि अपने भाई के विचारों तथा दिवाकर मित्र के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर किया था।

कन्नौज में बौद्ध धर्म की स्थिति हर्ष के प्रोत्साहन के कारण सुधर गई थी किन्तु बौद्ध धर्म की यह स्थिति हर्ष के ह्वेनसाँग से मिलने के बाद सुधरी थी। हर्षकालीन उत्तरी भारत में महायान मत अधिक प्रचलन में था। सम्राट हर्ष ने अपने शासन के प्रारम्भ में हीनयान धर्म को स्वीकार किया था किन्तु जब वह ह्वेनसाँग से मिला था तब से उसकी आस्था भी महायान धर्म में हो गई थी।

सम्राट हर्षवर्धन ने ह्वेनसाँग द्वारा दिये गये सिद्धान्तों से प्रभावित होकर महान सम्राट अशोक तथा कनिष्क की तरह ही बौद्ध धर्म को राज्याश्रय दिया। इसके संरक्षण तथा प्रचार–प्रसार के लिए अनेक कार्य किये। हर्षवर्धन द्वारा आदेश निकलवा कर पशु बली पर रोक लगवाई थी तथा किसी व्यक्ति के द्वारा माँस भक्षण को निषेध किया तथा उसके लिए कठोर दण्ड का विधान प्रस्तुत किया। हर्ष ने उन मठों की मरम्मत करवाई जो कि पहले से जीर्ण–शीर्ण अवस्था में थे। इसके बाद हर्ष ने अनेक नये बौद्ध विहारों, मठों तथा स्तूपों का निर्माण करवाया। हर्ष ब्राह्मणों के साथ–साथ बौद्ध भिक्षुओं को अपने राजकोष से खूब दान देता था। सम्राट हर्षवर्धन द्वारा प्रत्येक वर्ष एक सभा का आयोजन किया जाता था जिसमें वह अच्छे आचरण वाले बौद्ध भिक्षुओं को तो अच्छे ईनाम प्रदान करता था तथा जो बौद्ध भिक्षु दोषी पाये जाते थे उन्हे दण्ड देता था। हर्षवर्धन की धार्मिक सहिष्णुता का ही परिणाम था कि जैन, बौद्ध तथा ब्राह्मण सभी भिक्षु एक साथ रहते थे।

हर्ष ने अपनी शक्ति के बल पर कश्मीर के राजा से बुद्ध के दाँत को प्राप्त किया तथा उस दाँत को उन्होने कन्नौज के पश्चिम दिशा में स्तूप का निर्माण करवाकर उस स्तूप में उसे स्थापित कर दिया था।

ऐसे ही हर्ष ने अनेक स्तूपों का निर्माण करवाया। सम्राट हर्ष ने ही नालन्दा विहार का निर्माण करवाया। हर्ष ने बौद्ध धर्म के महायान मत के संरक्षक के रूप में उसके प्रचार के लिए अनेक कार्य किये थे। जिनमें सबसे प्रमुख कार्य कन्नौज की धर्मसभा का आयोजन थ। इस सभा का प्रारम्भ हर्ष ने बुद्ध की पूजा से किया इस सभा के अन्तर्गत हर्ष ने बौद्ध धर्म के दोनों मत हीनयान तथा महायान, जैन भिक्षु ब्राह्मणों का भी आमंत्रित किया था तथा उनमें वाद–विवाद करवाया था ताकि वह महायान मत को अन्य धर्मों से सर्वश्रेष्ठ बना सके तथा इस सभा के अन्तर्गत हर्ष ने घोषणा करवाई थी कि इस वाद–विवाद के अन्तर्गत यदि ह्वेनसाँग द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों को किसी भी व्यक्ति द्वारा चुनौती दी गई और वह उसे सिद्ध न कर सका तो उसका सिर काट लिया जायेगा।

इसी कड़ी में बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए प्रयाग मे भी हर्ष द्वारा महामोक्ष सम्मेलन का

आयोजन किया जाता था जो कि प्रत्येक पाँच वर्षों से आयोजित किया जाता था। जिसका प्रारम्भ भी वह बुद्ध की पूजा के साथ करता था।

सम्राट हर्ष नालन्दा विश्वविद्यालय के भी संरक्षक थे। नालन्दा विश्वविद्यालय उस समय विद्या का केन्द्र था। इस विश्वविद्यालय में कई सहस्त्र छात्र विद्योपार्जन करते थे। बहुत से छात्र तो अपनी ज्ञान पिपासा को शान्त करने आते थे। ह्वेनसाँग ने भी अपनी बौद्ध धर्म सम्बन्धी ज्ञान पिपासा को शान्त करने के लिए इस विश्वविद्यालय में अध्ययन किया था। हर्षवर्धन भी इस विश्वविद्यालय को अपने कोष से सहायता प्रदान करते थे।

ये सभी बातें हर्ष द्वारा बौद्ध धर्म को राज्याश्रय देने की ओर संकेत करती है अतः हम कह सकते हैं हर्ष ने सम्राट अशोक तथा कनिष्क की भांति ही बौद्ध धर्म को राज धर्म घोषित किया था तथा इसका प्रचार–प्रसार किया था।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. मिश्र जयशंकर, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पृष्ठ संख्या 710।
2. सिन्हा जे.बी., महात्मा बुद्ध तथा भारत के बौद्ध तीर्थ, पृष्ठ संख्या 33।
3. आचार्य चतुरसेन, बुद्ध और बौद्ध धर्म, पृष्ठ संख्या 9।
4. ह्वेनसाँग, अनुवादक शर्मा, ठाकुर प्रसाद, ह्वेनसाँग की भारत यात्रा, पृष्ठ संख्या 109–110।
5. शर्मा कृष्णगोपाल, जैन हुकमचन्द, शर्मा मुरारीलाल, भारत का इतिहास, पृष्ठ संख्या 448।
6. बाण, अनुवादक, पाठक जगन्नाथ, हर्षचरितम्, पृष्ठ संख्या 456।